Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

पंडित लखमीचन्द: सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

सार – *पंडित लखमीचन्द अपने समय के हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बहुचर्चित व्यक्ति थे। उनका नाम हरियाणा के लोकमानस में इस कदर रस-बस गया था कि आज भी ग्रामीण भाईयों को उनके द्वारा रचित भजन एवं रागनियाँ स्मरण हैं। हरियाणा के लोग खेतों, खलिहानों, चैपालों मेलों और अनेक सामाजिक पर्वो एवं तीज त्यौहारों के अवसर पर इन रागनियों और भजनों को गा-बजाकर अपार आनंद की अनुभूति करते हैं। भोली-भाली ग्रामीण जनता यह सोच भी नहीं सकती कि लखमीचन्द के इन रसिक एवं ज्ञान से ओत-प्रोत भजनों व रागनियों का कोई अन्य विकल्प भी हो सकता है। पंडित जी की किसी भी रागनी का सुमधुर आलाप उनके हृदय को रसप्लावित कर देता है। हरियाणा की जनता उन्हें सुनकर झूम उठती है।*

---------------------------------X---------------------------------

परिचय

यद्यपि उनका स्वर्गवास हुए लगभग पचहतर वर्ष हो चुके हैं परंतु हरियाणवी जनमानस पर उनकी याद आज भी ताजा है। "कोई उन्हें गन्धर्व पुरुष कहकर पुकारता है तो कोई आत्म-द्रष्टा कहकर, कोई उन्हें ब्रह्म-ऋषि कहता है, तो कोई भविष्य-द्रष्टा और कोई उन्हें आगमवेत्ता कहता है तो कोई युग-द्रष्टा। खैर! कुछ भी हो पंडित लखमी चन्द मानव सुलभ दुर्बलताओं से युक्त होते हुए भी एक महान एवं अद्भुत व्यक्तित्व के मालिक थे।"[18]

पंडित लखमीचन्द के शिष्य एवं सम्बन्धी रत्ती के अनुसार "लखमीचन्द जी की बत्तीसी बहुत सुंदर थी। उनका शीष गोल तथा छोटा था।" पंडित लखमीचन्द को बड़े निकट से जानने वाले मनाना गांव के वैद्य रामधन के अनुसार – "लखमीचन्द की आवाज बड़ी मधुर एव ऊँची थी वे पंचम स्वर में गाया करते थे। सम्भवता इतनी ऊँची आवाज किसी भी सांगी की नहीं चढ़ी। 'फाइन' की धोती बाँधते, 'ज़फर' की कमीज पहनते और रेशमी दुशाला कन्धे पर लेते थे। रेशमी खंडवा अर्थात् 'टसरी' हरियाणवी ग्रामीण ढंग से बांधते और लाल कुरम की देशी जूती, पहनते थे। सर्दियों में कोट भी धारण करते जिस पर अनेक सोने-चांदी के पदक लगे होते। एक बार सांग के मंच पर खंडवा बांध कर आते थे परंतु उसे उतारकर कुर्सी पर रख देते। जितनी देर तक सांग मंचन का कार्यक्रम चलता वे कुर्सी पर नहीं बैठते थे। वे अधिकतर हुक्का पीते थे, परंतु बीच में कभी-कभी बीड़ी-सिगरेट भी पी लेते थे। शराब उनकी कमजोरी थी। कभी-कभी तो एक दिन में दो-दो बोतल शराब तक का सेवन कर लेते थे। कई बार प्रातः काल ही वह मदिरापान कर लेते थे, परंतु शराब पीकर वे बहकते नहीं थे"[19]

गांव महमूदपुर के एक अस्सी वर्षीय वृद्ध पं॰ दीपचन्द, जिन्होंने अपने यौवन में पं॰ जी के लगभग बीस सांग देखे हैं। उन्होंने महाकवि लखमीचन्द के व्यक्तित्व के विषय में बताया – "पंडित जी बड़े स्वाभिमानी थे। चापलूसी करना वे जानते ही नहीं थे। वे बड़े स्पष्टवादी थे। वे बड़ी शान से मस्ती में चलते थे।"[20]

पंडित लखमीचन्द स्वभाव के बड़े क्रोधी थे। वे भावुक किस्म के व्यक्ति थे। कई बार तो सांग दर्शकों अथवा पुलिस अधिकारियों को सांग में गड़बड़ करने के कारण चपत तक जड़ देते थे। उन्हें अपने सांग प्रदर्शन अथवा मंच पर किसी प्रकार की गड़बड़ असहनीय थी।

"क्रोधी स्वभाव के होते हुए भी वह अत्यधिक भावुक और संवेदनशील थे। उनके नयन-निर्झर अनेक बार मार्मिक प्रसंगों व अवसरों पर झरते देखे गए। 'हरिश्चन्द्र का सांग मंचन

[18] डॉ. राजेन्द्र स्वरूप 'वत्स' 'सांग सम्राट पंडित लखमीचन्द', संस्करण 1991, पृ॰ 3

[19] डॉ. राजेन्द्र स्वरूप, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 3

[20] सूचक: पंडित दीपचन्द, गांव महमूदपुर, जिला सोनीपत, त॰ गोहाना

www.ignited.in

करते समय रोहतास 'कुंवर' की मृत्यु के बाद जब हरिश्चन्द्र द्वारा रानी अपनी दीनता व विवशता प्रकट करती है तो उस समय लखमीचन्द स्वयं रो देते थे।"[21]

"पंडित लखमीचन्द परिश्रम को प्रारब्ध का पर्याय मानते थे। कठिन परिश्रम के प्रति उनकी अटूट आस्था थी।" यही कारण है कि उनका जीवन सदैव सक्रियता एवं संघर्ष से स्पन्दित रहा है। भारत भूषण सांघीवाल ने उनकी श्रम निष्ठा के आदर्श को इस प्रकार उद्घाटित किया है, - "पंडित लखमीचन्द 'सत्यमेव-जयते' के साथ 'श्रम एवं जयते' के सिद्धान्त के भी अनुयायी थे। सांग में ही जन समुदाय से एक मिट्टी का ढ़ेला उठाकर बाहर पाल डालने का वचन ले लेते थे। सांग समाप्त करके पहले स्वयं तालाब से एक भरी मिट्टी का ढ़ेला-उखाड़कर तथा कंधे पर रखकर बाहर डालते थे। इस प्रकार तालाब की काफी खुदाई ऐसे श्रम दान से ही हो जाती थी।"[22]

उनके जीवन के कितने ही ऐसे रोचक एवं आश्चर्यपूर्ण प्रसंग हैं, जिनसे अभिभूत होकर हम यही कह सकते हैं। लखमीचन्द एक मान विभूति थे।

जन्मः

"वेद मंत्रों से गुंजित, यज्ञधूमों से धूसरित, सरस्वती से सिक्त, महाभारत की साक्षी, गीता का गायिका, संतों की सेविका, बाणभट्ट, हर्षवर्धन और सूरदास सरीखे शारदा पुत्रों की धात्री, लोकसंगीत की संरक्षिका, लोकनृत्य एवं लोकनाट्य की रंगस्थली यही हरियाणा की पावन धरती है, जिसे सदैव अपनी अजस्र सांस्कृतिक थाती पर गर्व रहा है और गौरव भी। नर-गंधर्व पंडित लखमीचन्द इसी वीर-प्रसू-धर्मधरा की गोदी में चहके-महके, नाचे-गाए, अंततः इसी की पवित्र माटी में विलीन हो गए।"[23]

हरियाणा के सोनीपत जनपद, दिल्ली सीमा पर, यमुना के खादर में शेरशाह सूरी मार्ग पर स्थित कुंडली 'चेक-पोस्ट' से पूर्व लगभग तीन-चार किलोमीटर पर एक गांव है - जांटीकलां। इसी गांव में 1900 ई॰ के आस-पास पंडित लखमीचन्द का जन्म हुआ था। उनके जन्म-स्थल का उल्लेख उनकी अपनी रागिनियों में तो अनेक स्थानों पर मिलता है।

[21] डॉ. राजेन्द्र स्वरूप 'वत्स' 'सांग सम्राट पंडित लखमीचन्द', संस्करण 1991, पृ. 4

[22] डॉ. पूर्ण चन्द शर्मा, 'पंडित लखमीचन्द ग्रन्थावली', संस्करण 2002, पृ॰ 8

[23] डॉ. पूर्ण चन्द शर्मा, 'पंडित लखमीचन्द ग्रन्थावली', संस्करण 2002, पृ॰ 1

"लखमीचन्द मिलै जाटी मैं मरहम पट्टी करवाले।"[24]

परंतु यहां उकनी जन्म-तिथि का संबंध है, "उनके पुत्र एवं परिवार-जन भी उनके जन्म की सही तिथि बताने में असमर्थ रहे हैं।"[25] क्योंकि जिस साधारण आर्थिक स्तर के किसान परिवार में उनका जन्म हुआ, उसमें जन्म का सही-सही लेखा-जोखा हरियाणा में नहीं रखा जाता था। उनकी आयु की गणना के आधार पर ही उनका जन्म-वर्ष पूर्वाक्त ठहरता है। डॉ. राजेन्द्र वत्स सन् 1945 में उनकी मृत्यु के समय 42-43 वर्ष की आयु मानते हैं।[26] अर्थात वे लखमीचन्द का जन्म 1902 या 1903 मानते हैं जबकि श्री कृष्ण चंद्र शर्मा का मत है – "पंडित लखमीचन्द का जन्म जिला सोनीपत के गांव जाट्टी कलां में एक साधारण किसान परिवार में सन् 1901 में हुआ।[27] जबकि डॉ. पूर्ण चंद शर्मा भी 1902 या 1903 में उनका जन्म मानते हैं।"[28]

माता-पिताः

"पंडित लखमीचन्द के पिता का नाम पंडित उदमीराम कौशिक तथा माता का नाम असरफी देवी था। जो ब्रज धरती में बसे गांव हीरापुर की निवासी थी।"[29] पंडित लखमीचन्द के दो भाई कंगन और दीपा और तीन बहिनें धन्तों, रत्नो और छोटी थी।[30] इन युग आत्माओं की सन्तान लखमीचन्द हरियाणा के संगीत क्षेत्र के तानसेन और जीवन दर्शन के वेद व्यास बने शायद वेद व्यास और भर्तृहरि के बाद कोई विद्वान यहां के इतिहास का अंग रहा हो जो लखमीचन्द के मानव प्रभाव की बराबरी कर सके।

शिक्षाः

'मसि कागद छुओ नहीं, कलम गही नहीं हाथ' वाला कबीर का कथन पंडित लखमीचन्द के जीवन पर भी खरा उतरता है। "घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण बालक लखमीचन्द पाठशाला न जा सके तथा आजीवन अशिक्षित रहे। सात-आठ वर्ष की अल्पायु में इन्हें पशु-चराने का कार्य

[24] वही, पृ. 538

[25] हरिश्चन्द्र बंधु 'श्री लखमीचन्द का काव्य वैभव', संस्करण 1997, पृ. 8

[26] डॉ. राजेन्द्र स्वरूप 'वत्स' 'सांग सम्राट पंडित लखमीचन्द', संस्करण 1991, पृ॰ 10

[27] श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा 'पंडित लखमी सूर्य लखमी चन्द', संस्करण 2001, पृ॰ 34

[28] डॉ. पूर्ण चन्द शर्मा, 'पंडित लखमीचन्द ग्रंथावली', संस्करण 2002, पृ॰ 1

[29] श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा 'पंडित लखमी सूर्य लखमी चन्द', संस्करण 2002, पृ॰ 34

[30] डॉ. केशोराम शर्मा, 'गन्धर्व पुरुष पंडित लखमी चन्द', संस्करण वि॰ सम्वत्-2057, पृ॰ 19

सौंपा गया तथा पंडित जी ग्वाले बन गए। गायन की ओर उनका रुझान शुरू से ही था तथा हमेशा गुनगुनाते रहते थे।"[31] गुरु मानसिंह के सान्निध्य में रहकर लखमीचन्द ने गाने-बजाने की शिक्षा ली।

विवाह तथा संतान:

पंडित लखमीचन्द का विवाह सन् 1923 ई॰ में गांव इस्लामपुर, जिला गुड़गांव में पंडित बस्ती राम की सुपुत्री भरपाई देवी के साथ हुआ। श्रीमती भरपाई देवी से पंडित जी को दो पुत्र रत्न प्राप्त हुए, जिनमें से छोटे पुत्र की मृत्यु शैशवकाल में ही हो गई थी। इस समय इनकी एक मात्र संतान पंडित तुलेराम है जो वर्तमान युग के प्रमुख सांगी हैं। भारत ने पंडित तुलेराम को 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. दशरथ ओझा: हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

2. दुर्गा दीक्षित: नाटक और नाट्य शैलियां, आला साहित्य भवन, 1975

3. डॉ. देवराज: प्रतिक्रियाएं, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1968

Corresponding Author

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

inderdongra@gmail.com

[31] डॉ. केशोराम शर्मा, 'गन्धर्व पुरुष पंडित लखमी चन्द', संस्करण वि॰ सम्वत्- 2057, पृ॰ 20